अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन

भगवान ऋषभ ने समग्रता का जीवन जीया : आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 27 अप्रैल।

भगवान ऋषभ ने छह मास कायोत्सर्ग में खड़े हुए हम ऋषभ को मनाते हैं, बाहुबली भी लंबे समय तक खड़े रहे। सबसे बड़ी बात ऋषभ की है कि उन्होंने श्रमण श्रेणी का प्रतिपादन किया। भारतीय परंपरा में वैदिक और श्रमण परंपरा दो मुख्य परंपरा रही है। भगवान ऋषभ ने जो जीवन जीने की प्रणाली दी अगर वह प्रणाली आज होती तो आज समाज, राजनीति का दूसरा रूप सामने होता। आदमी भी दूसरे प्रकार होता है। भगवान ऋषभ ने समग्रता का जीवन जीया, उन्होंने समाज की स्थापना की, औषि करना सिखाया। श्रमण श्रेणी का मूल सूत्र है - समण जिसमें तीन शब्द है प्राऔतिक का शब्द है सम और श्रम। सम का अर्थ है समानता, सामायिक, समता की साधना करना। सम उपशम की साधना करो, लड़ाई कलह मत करो शांत रहो कसाय को शांत रखो। उक्त विचार आचार्यश्री ने तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवरण में आयोजित अक्षय तृतीया के पारणा महोत्सव पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए फरमाये।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने फरमाया कि चुनाव के समय में देखा जा सकता है लोकतंत्र का असली स्वरूप चुनाव के समय अभ्रद व्यवहार होता है तब उनका रूप सामने आ जाता है। व्यक्ति के व्यवहार में शालीनता, गंभीरता होनी चाहिए। भगवान ऋषभ का अवदान है सम और श्रम की साधना करें, जो उनका बड़ा अवदान है। उपवास के साथ समता की साधना का अभ्यास करने की जीवन शैली बन जाए। मैं मानता हू कि एक वर्ष तक भूखा रहना कठिन है। उपवास एक बहुत बड़ी साधना है। वर्षीतप करने वालों को साधुवाद देना चाहता हूं। उनका उपवास और जयादा और्ताथ होगा।

युवाचार्य प्रवर ने फरमाया कि भगवान ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक के 24 तीर्थंकर हुए हैं, जिसमें अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हैं। जबकि ऋषभ प्रथम तीर्थंकर थे। उनके जीवन में समग्रता का दर्शन होता है। उन्होंने विद्या का ज्ञान दिया। जिस तरह मां बच्चे को सिखाती है उसी तरह भगवान ऋषभ ने लोगों को सबकुछ सिखाया। भगवान ऋषभ के साथ अनेक लोग अनुगामी बने। ऋषभ ने और अनेक बातें सिखाई किंतु उन्होंने जनता को दान देना नहीं सिखाया तो उनको एक वर्ष तक भूखा-प्यासा रहना पड़ा। भारतीय त्यौंहारों में होली, दिवाली का महत्त्व है उसी तरह अक्षय तृतीया का महत्त्व है, जो भगवान ऋषभ से जुड़ा हुआ है।

''आयो वृषि तप रो पारणो'' गीत का संगान करते हुए युवाचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि जिसके शरीर को उपवास मान जाता है, सहनशक्ति उसके लिए वर्षीतप करना कोई खास कठिन नहीं होता।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने फरमाया कि भगवान ऋषभ न अपनी साधना का तप स्वीकार किया है उन्होंने पूरा समाज दर्शन दिया। एक समय था जब मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित थी। कल्पवृक्ष के माध्यम से आवश्यकताओं से पूर्ति कर लेते थे। मनुष्य की आवश्यकताएं बढी तो ऐसा लगा कि कोई व्यवस्था नहीं होगी तो आदमी जी नहीं सकेगा। उन्होंने शिल्प कला, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र सिखाया। यदि हम इन शास्त्रों का अध्ययन करना चाहें, भगवान ऋषभ नई संस्औति और नई सभ्याता को जन्म दिया। साधु का श्रृंगार है उपवास।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने फरमाया कि उपवास एक ऐसी औशधि है मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर रहा है। कैंसर का रोग जैसे ही शरीर में प्रवेश करता है वैसे ही उपवास का उपक्रम किया जाता है कोशिकाओं की गुणवत्ता कम हो जाती है और बीमारी कम होने लगती है। अनेक लोग अनशन करते हैं।

तपस्या एक ऐसा उपक्रम है जिससे व्यक्ति शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त करता है। हम तपस्या के द्वारा ज्ञान की, आनन्द की शक्ति को जगा सकें। बाह्य तपस्या के साथ व्यक्ति को आंतरिक तपस्या को भी महत्त्व देना चाहिए।

प्रवास व्यवस्था समिति श्री बाबूलालजी सेखानी, श्री भीखमचन्द नाहटा, श्री कन्हैयालाल गिड़िया तपस्वियों को प्रतिक चिन्ह भेंट कर उनका सम्मान किया।

श्री बाबूलाल सेखानी ने कठोतिया चेरीटेबल ट्रस्ट को प्रशस्ति पत्र, इक्कीस हजार रुपये की राशि का चेक भेंट किया। श्री रूपचन्दजी भंसाली, अणुव्रत राष्ट्रीय संयोजक श्री भीखमचन्द नखत ने आचार्यप्रवर को साहित्य भेंट किया।

इस अवसर पर बालक आदित्य सेखानी ने अपने- भावों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मण्डल व तेरापंथ कन्या मण्डल के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री मोहजीत कुमारजी व श्री कमल दूगड़ ने किया।

श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा

बीदासर, 27 अप्रैल।

कस्बे में बैण्डबाजों व जुलूस के साथ पारणा करने वाले श्रद्धालु बीदासर के मुख्य मार्गों से होते हुए तेरापंथ भवन पहुंचे। आज के इस विशाल महोत्सव के अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। भीड़ इतनी ज्यादा थी कि इस कार्यक्रम को तेरापंथ भवन के बाहर सड़कों पर लगी टिवियों पर कार्यक्रम देखना पड़ा। आगंतुकों ने व्यवस्था की खूब सराहना की।

वीर भूमि बीदासर में आज आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रवास काल में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। सड़क भीड़ से अटी नजर आई। देशभर से बसों, अपने निजी वाहनों से आये लोगों, व पारणा करने वाले श्रावक-श्राविकाओं ने तेरापंथ भवन पहुंच कर कलश में इक्षुरस (ईख) का युवाचार्य महाश्रमण आदि संतों को दान देकर पारणा किया। लगभग 105 पारणा करने वाले में 7 पारणे बीदासर के था। जिसमें अधिकतम 27वां वर्षीतप करने वाली छोटी खाटू की इचरजदेवी डूंगरवाल थी।

सम्मान समारोह का आयोजन

बीदासर, 27 अप्रैल।

कस्बे के तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाप्रज्ञ मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति की ओर से आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रवास के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्औष्ट सेवा देने वालों का सम्मान आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में किया गया। समिति की ओर से पालिकाध्यक्ष सावित्रीदेवी सोनी, पूर्व पालिकाअध्यक्ष मेघराज सांखला, समाजसेवी धर्मचन्द सोनी, पण्डित बजरंगलाल शर्मा सहित समाज के दो दर्जन व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं व विभिन्न समाचार पत्रों से जुड़े सभी पत्रकारों का सम्मान व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी, सहअध्यक्ष हनुमानमल सेखानी, मंत्री कन्हैयालाल गिड़िया, स्वागताध्यक्ष भीखमचन्द नाहटा व मोहनलाल चौरड़िया ने प्रतिक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया।

णमोक्कार महामंत्र कलेण्डर का विमोचन

बीदासर, 27 अप्रैल।

कस्बे के मघवा समवसरण में समाजसेवी मोहनलाल नाहटा द्वारा प्रकाशित णमोकार महामंत्र कलेण्डर का विमोचन आज सोमवान को अक्षय तृतीया महोत्सव के प्रवचन के दौरान युवाचार्य महाश्रमण ने किया। इस अवसर पर मुनि जयकुमार ने जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा प्रकाशित ''आदिम युग का आदमी'' व ''महाप्रज्ञ ने कहा भाग 32'' आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित की। इसी श्रृंखला में विनोद बांठिया ने उपासक शिविर का फॉल्डर आचार्य महाप्रज्ञ व युवाचार्य महाश्रमण को भेंट किया।

- अशोक सियोल
99829 03770